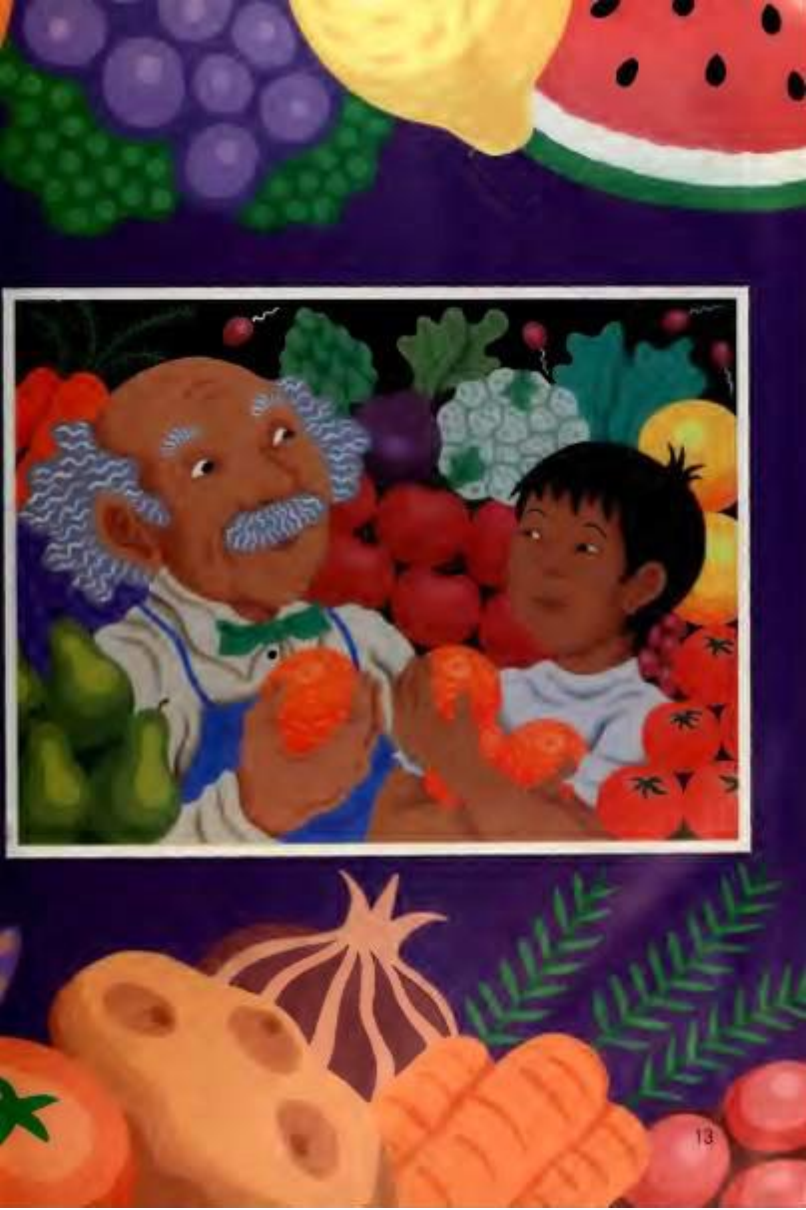


फल और सब्ज़ी वाला

लेखक : रोनी





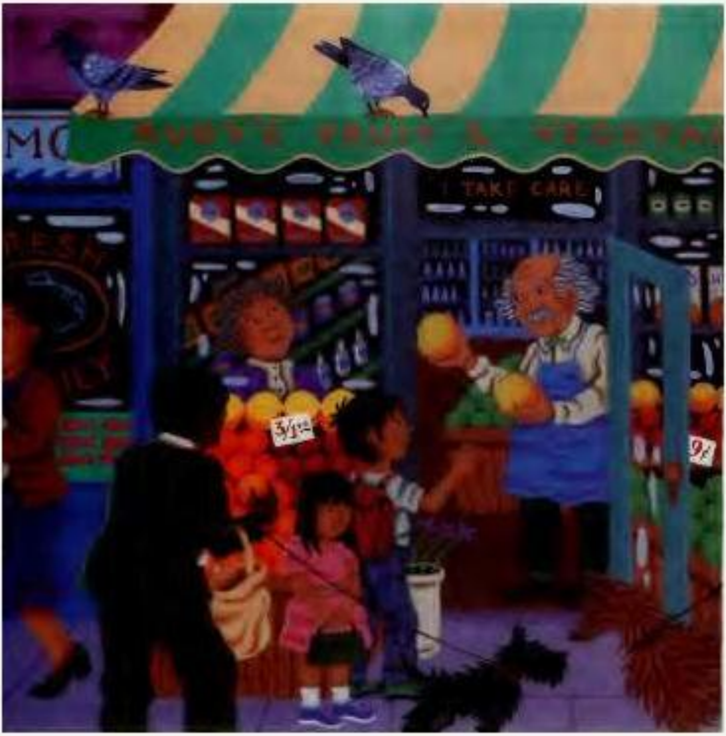


रूबी रुबेन्स्टीन 'फल और सब्ज़ी वाला' था. उसका सिद्धांत था, 'मैं ख्याल रखता हूँ.' सप्ताह में छह दिन, रूबी सूर्य उदय होने से पहले ही उठ जाता था.

"क्या समय हो गया, रूबी?" उसकी पत्नी ड्रुडी हमेशा रज़ाई के अंदर लेटे-लेटे ही पूछती.

"समय हो गया," रूबी हमेशा यही कहता. फिर वह बिस्तर से बाहर आ जाता. झुक कर अपने घुटने छूता, फिर अपने पाँव छूता और अपने स्टोर के लिए सबसे ताज़ा और बढ़िया फल, सब्ज़ियाँ लेने के लिए झटपट बाज़ार की ओर चल देता.

लगभग पचास वर्षों से ऐसा ही हो रहा था-जब से ड्रुडी और वह, जीवन में नई शुरुआत करने के लिए, इकट्ठे जहाज़ पर सवार होकर सागर पा यहाँ आये थे.



सन-हो और उसकी बहन, यंग-मी, जो परिवार के साथ, जीवन में नई शुरुआत करने के लिए, हवाई जहाज़ में यहाँ आये थे, हर दिन स्कूल जाने से पहले, रूबी की कलाकारी देखने के लिए उसके स्टोर में आते थे.

“यो-हो, मिस्टर रूबी!” सन-हो पुकारता था. “मुझे दिखाइये!”



और सिर हिला कर संकेत करते हुए, रूबी सेबों, नारंगियों और नाशपातियों को पिरामिड के आकार में ढेर लगा कर सजा देता, अंगूरों को हीरों के आकार में रखता, सलाद के पत्तों को बीच में लगा देता और थोड़ी-सी ब्रोक्कोली या जलकुंभी से इन ढेरों की सजावट करता.

उसे देख कर लगता की कोई कलाकार अपनी कलाकृति बना रहा था. यह सब देखकर सन-हो सम्मानित महसूस करता. "यह तो एक कलाकृति जैसा दिख रहा है, मिस्टर रूबी!" वह शर्माते हुए कहता.

रूबी सदा मुस्करा देता. उसकी मुस्कान सन-हो को प्रफुल्लित कर देती और उसके मन में एक इच्छा जागृत होती. सन-हो बड़े ध्यान से रूबी को खरबूजों के साथ बाज़ीगरी करते हुए देखता. रूबी उन्हें बड़े चाव से काटता और हर फांक को प्लास्टिक में लपेट कर रखता. ऐसे समय सन-हो के मन की इच्छा और प्रबल हो जाती.

"वह तो एक कलाकार है, सच में," जेब में एक सेब और कुछ आलूबुखारे रखते हुए वृद्ध एला बोली.

रूबी बुरा न मानता. वह बस आँख से संकेत करता और इतना ही बोलता, "स्वाद चखो!" फिर जो भी ख़ास वस्तु उस दिन स्टोर में होती वह चीज़ सन-हो को, उसकी बहन को, और उन सब को जो लेना चाहते, दे देता था.





“रूबी के बिना हम लोग क्या करते?” मैरी मोर्रिस्सी ने एक धुंधली दुपहर में स्टोर में आये लोगों से पूछा. डिलानो स्ट्रीट में रहने वाले लोगों ने एक आह भरी और ऐसे डरावने विचार पर अपना सिर हिल्लाया.

“मिस्टर रूबी,” सन-हो ने कहा, “वह तो अद्भुत हैं.”



हाँ, डिलानो स्ट्रीट में रहने वाले सब लोग रूबी की बहुत प्रशंसा करते थे. लेकिन रूबी बूढ़ा हो रहा था. कुछ समय से जब सुबह वह अपने घुटने और पाँव छूता तो उसे शरीर में अकड़न महसूस होती जिसे रूबी अनदेखा कर देता. घुटनों के चरमराने की आवाज भी आती जिसे ङ्गुडी अनसुना कर देती. यद्यपि रूबी इस बात को स्वीकार नहीं करेगा, कभी-कभी उसके मन में इच्छा होती कि कुछ देर और वह बिस्तर में लेटा रहे.

"रूबी," एक दिन रज़ाई के अंदर से ही ङ्गुडी बोली. "बहुत समय पहले हम दोनों ने एक साथ निश्चय किया था कि जब हम बूढ़े हो जायेंगे तो अपना स्टोर बेच कर पहाड़ों में रहने के लिये चले जायेंगे. क्या वह समय आ गया है, रूबी?"

"नहीं!" रूबी गरजा. और वह कूद कर बिस्तर से बाहर आया और सामान्य से दुगनी कसरत करके बाज़ार की ओर दौड़ा.



यह दिखाने के लिए कि वह अभी भी जवान था उस दिन उसने स्टोर में कुछ अधिक ही मेहनत की और फलों, सब्ज़ियों की सजावट के लिए अपने सबसे सुंदर डिज़ाइन बनाये.

उस दुपहर में जब सन-हो आया, रूबी आलुओं को एक नये तरीके से सज़ा रहा था. सन-हो ने देखा कि रूबी उन्हें हवा में घुमा कर बड़ी निपुणता से फेंक रहा था. हर आलू पहले वाले आलू के पास आकर गिर रहा था और ऐसे एक सुंदर कतार बनती जा रही थी.



“यो-हो, मिस्टर रूबी!” प्रशंसा से भरे हुए सन-हो ने कहा, “मुझे यह करना सिखायें?”

बड़े अभिमान के साथ रूबी ने एक आलू और दो सेब उठाये और सन-हो को उनसे बाज़ीगरी करना सिखाया. फिर रूबी ने उसे सिखाया कि अंगूर कैसे रखने चाहियें ताकि वह गिरे नहीं. जब तक सन-हो के माता-पिता आये, रूबी ने उसे सामान तौलना-बेचना और पैसों का हिसाब रखना भी सिखा दिया था. फिर उसने सन-हो को बिठा कर यह भी बताया कि कैसे वह सुबह जल्दी उठ कर बाज़ार जाता था और स्टोर के लिए फल और सब्ज़ियाँ चुनता था.

“मुझे साथ ले चलिये!” सन-हो ने विनती की, उसके मन में पनपती इच्छा इतनी प्रबल हो गयी थी कि वह अपने को रोक ही न पाया. “प्लीज़?”





रूबी ने कुछ पल सोचा. फिर उसने कहा, “मेरा सौभाग्य.”

अगली सुबह, जब आकाश में वीनस अभी चमक ही रहा था, रूबी सन-हो को बाज़ार ले गया. सन-हो की सूंघने की शक्ति असाधारण थी. दोनों ने मिलकर सबसे स्वादिष्ट फल, सबसे बढ़िया सब्ज़ियाँ पसंद की. फिर रूबी ने सन-हो को दिखाया कि किस तरह मोल-भाव करके सबसे अच्छे दाम पर फल-सब्ज़ियाँ खरीदी जा सकती थीं.

सारा दिन सन-हो को अपने पर बड़ा अभिमान हुआ. और रूबी? उसे लगा कि वह.....सच में थक गया है. जब ड्डी किसी ग्राहक के साथ व्यस्त होती तब रूबी झुक कर ऐसे दिखता कि वह जूते का तस्मा बाँध रहा था.





लेकिन असल में वह जम्हाई लेता था. दुपहर होते-होते वह हर कुछ मिनटों के बाद स्टोर के बाहर जाता था. “फल!” वह ड्डुडी की ओर चिल्लाता. “फलों को देखना होगा!” वह कहता. लेकिन बाहर जाकर तो वह छींक मारता था.

“आपके स्वास्थ्य के लिये, मिस्टर रूबी,” सन-हो ने एक रुमाल देते हुए फुसफुसा कर कहा.

“धन्यवाद, मिस्टर सन-हो,” रूबी ने, बिना शोर किये अपनी नाक साफ़ करते हुए, कहा.

उस रात डिलानो स्ट्रीट में बर्फ पड़ने लगी.



सारी रात बर्फबारी हुई और सुबह स्ट्रीट गोभी के फूल जैसे सफ़ेद और ठंडी थी.

कई वर्षों में पहली बार उस दिन रूबी उठा तो वह बीमार लग रहा था. उसका चेहरा लाल था और माथा गर्म. "आज काम नहीं करोगे." ट्रुडी ने कहा. "रूबी का फल और सब्ज़ियों का स्टोर अगली सूचना तक बंद रहेगा." उसके बिना डिलानो स्ट्रीट के लोग क्या करेंगे? रूबी सोच में पड़ गया. लेकिन वह इतना बीमार था कि उसने इस बात की कोई चिंता न की. जब सन-हो आया तो उसने देखा कि स्टोर बंद था. उसे चिंता हुई. रूबी कहाँ था?



ऊपर बिस्टर में लेटा रूबी ऊंघ रहा था. वह वसंत ऋतु और ताज़ा खूबानियों के सपने देख रहा था. एक बार जब उसकी आँख खुली तो सन-हो को अपने निकट खड़े देखा....क्या वह सच में खड़ा था?

"चिंता न करें," उसे लगा कि सन-हो कह रहा था. "मैं संभाल लूंगा." फिर जिस अनोखे ढंग से सन-हो प्रकट हुआ था वैसे ही वह लुप्त हो गया. क्या रूबी सपना देख रहा था?

जीवन में पहली बार, अगले तीन दिन रूबी इतना बीमार रहा कि वह स्टोर के विषय में कुछ सोच ही न पाया. वह रज़ाई में लेटा रहा और ड्रुडी की प्यार भरी देखभाल का आनंद उठाता रहा. और सबसे अच्छा लगा बार्ले का सूप जो ड्रुडी ने उसके लिए कई बार बनाया. चौथे दिन की सुबह वह इतना स्वस्थ हो गया कि स्टोर की चिंता होने लगी. पांचवें दिन, शनिवार, की सुबह वह अपने को रोक न पाया. "मेरा स्टोर," वह चिल्लाया. ड्रुडी का सहारा लेकर उसने कपड़े बदले. और फिर स्टोर खोलने के लिए झटपट चल दिया.



वहां पहुँच कर उसे कितना आश्चर्य हुआ! स्टोर तो खुला हुआ था. वास्तव में तो ऐसा लगा की स्टोर कभी बंद ही नहीं हुआ था. लाल पेप्पर पिरामिड के आकार में सजे थे, खजूर हीरों के आकार में और टमाटर तिकोने आकार में. सन-हो के पिता एला को गाजर तौल कर दे रहे थे. सन-हो की माँ पैसों का हिसाब रख रही थी. यंग-मी नाशपातियाँ साफ़ कर रही थी. और स्टोर के बीच में खड़ा सन-हो ख़ुशी से मुस्करा रहा था. वह ग्राहकों को किसी नई चीज़ का स्वाद चखा रहा था.

जब उन्होंने रूबी को देखा तो सबने उत्साह और प्रसन्नता से उसका स्वागत किया. रूबी ने ख़ुशी से झुक कर उनका अभिवादन किया.

"मैंने संभाल लिया, मिस्टर रूबी!" सन-हो ने बड़े गर्व के साथ कहा.

"मैं देख रहा हूँ," रूबी बोला. "मेरी तरह तुम भी फल और सब्ज़ी वाले हो, सन-हो."

सन-हो का चेहरा रूबी की लाल मूली जैसा हो गया. मन में जो इच्छा सी पनप रही थी वह गायब हो गयी थी. उसकी जगह नई भावना प्रकट हो गयी थी, गर्व की.

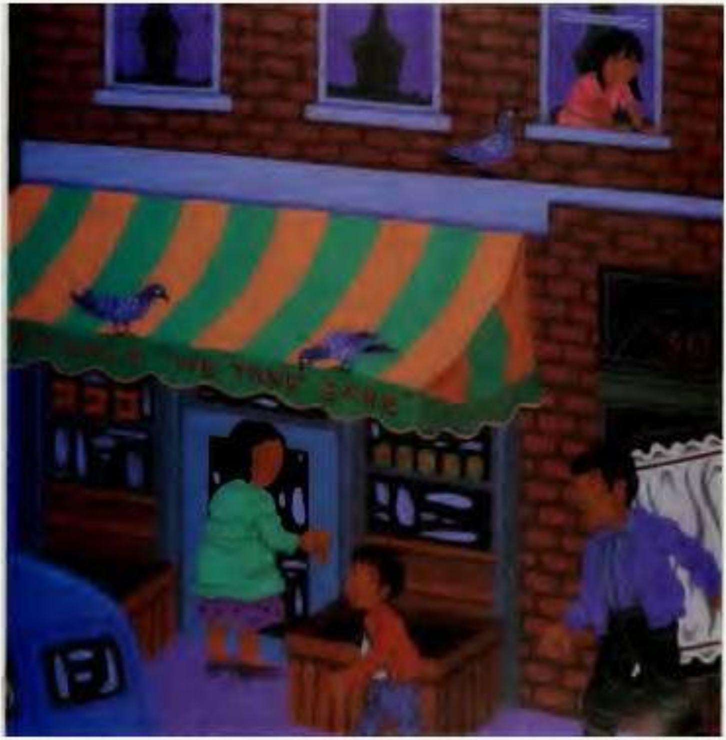
"क्या समय आ गया, रूबी?" ड्डुडी ने धीमे से पूछा.

रूबी ने एक आह भरी. वह सोचने लगा कि सन-हो और उसके परिवार को वह कितना चाहता था और उन्होंने उसके स्टोर का कितना ध्यान रखा था. उसने अपने घुटनों की अकड़न और चरमराहट के बारे में सोचा. उसने पहाड़ों और ड्डुडी की प्यार भरी देखभाल के बारे में सोचा. सबसे अधिक उसने ड्डुडी के स्वादिष्ट बार्ले सूप के बारे में सोचा.

"समय हो गया है," उसने आखिरकार कहा.

अब सन-हो फल और सब्ज़ियों वाला है! हर सुबह सूर्य के उदय होने से पहले, स्कूल जाने के समय से भी पहले, सन-हो और उसका परिवार उठ जाता है और झटपट तैयार हो कर अपने स्टोर के लिए सबसे स्वादिष्ट फल और सबसे बढ़िया सब्ज़ियाँ लेने के लिये वह बाज़ार चल देते हैं.







और रूबी? वह अभी भी फल और सब्ज़ी वाला है....अंतर बस इतना है कि वह और ड्रुडी फल-सब्ज़ियाँ अब अपने लिये उगाते हैं.



समाप्त